Shri Hanumat Vadvanal Stotram

श्रीहनुमत् वडवानल स्तोत्रम्

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

यह महास्तोत्र शत्रुबाधा, ग्रहदोष, प्रेतबाधा, राजबंधन तथा कठिन से कठिन रोगों से मुक्ति हेतु प्रसिद्ध है। गुरु की आज्ञा प्राप्त कर शुभकाल में इसका काम्य प्रयोग करना चाहिये। ब्रह्मचर्य व समस्त नियमों को ध्यान में रखते हुए नित्य 108 पाठ 41 दिन करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। घोर संकट में अधिक पाठ करें। साधना स्थल में शिवमन्दिर, राममन्दिर, हनुमान मन्दिर या ग्रहमन्दिर, इनमें जो स्थान एकान्त एवं साधना के अनुकूल हो वही स्थान श्रेष्ठ है। हनुमानजी उग्र देवता हैं। अतः इनकी उपासना समस्त यमनियमों को ध्यान में रखते हुए करें।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीहनुमान् वडवानलस्तोत्रमंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, श्रीहनुमानवडवानलदेवता, ह्रां बीजम्, ह्रीं शक्तिं, सौं कीलकं, मम समस्त विघ्न दोष निवारणार्थे, सर्वशत्रुक्षयार्थे, सकलराजकुलसंमोहनार्थे, मम समस्त रोगप्रशमनार्थम्, आयुरारोग्यैश्वर्याऽभिवृद्ध्यर्थं समस्तपापक्षयार्थं श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं च हनुमद् वडवानलस्तोत्र जपे विनियोगः।

ध्यानममंत्र- मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतम् शरणं प्रपद्ये।

स्तोत्रम्- ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते प्रकटपराक्रम सकलदिङमण्डल यशोवितानधवलीकृत जगतत्रितय वज्रदेह रुद्रावतार लंकापुरीदहय उमाअर्गलमंत्र उदधिबंधन दशशिरः कृतान्तक सीताश्वसन वायुपुत्र अंजनीगर्भसंभूत श्रीरामलक्ष्मण आनन्दकर कपिसैन्यप्राकार सुग्रीवसाह्यरण पर्वतोत्पाटन कुमारब्रह्मचारिन गंभीरनाद सर्वपापग्रहवारण सर्वज्वरोच्चाटन डाकिनी-विध्वंसन ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो महावीरवीराव सर्वदुःख निवारणाय ग्रहमण्डल सर्वभूतमण्डल सर्वपिशाचमण्डलोच्चाटन भूतज्वर एकाहिकज्वर द्वयाहिकज्वर त्र्याहिकज्वर चातुर्थिकज्वर संतापज्वर विषमज्वर तापज्वर माहेश्वर वैष्णवज्वरान् छिन्दि-छिन्दि यक्ष ब्रह्मराक्षस भूतप्रेत पिशाचान् उच्चाटय-उच्चाटय स्वाहा।

ॐ ह्रां श्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः आं हां हां हां हां ॐ सौं एहि-एहि-एहि ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते श्रवणचक्षुर्भूतानां शाकिनी डाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषं हर-हर आकाशभुवनं भेदय-भेदय छेदय-छेदय

मारय-मारय शोषय-शोषय मोहय-मोहय ज्वालय-ज्वालय प्रहारय-प्रहारय शकलमायां भेदय-भेदय स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महाहनुमते सर्वग्रहोच्चाटन परबलं क्षोभय-क्षोभय सकलबंधन मोक्षणं कुरु-कुरु शिरः शूल-गुल्मशूल सर्वशूलान्निर्मूलय-निर्मूलय नागपाशानन्त वासुकि तक्षक कर्कोटकालियान् यक्षकुलजगत रात्रिंचर-दिवाचर-सर्पान्निर्विषं कुरु-कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महाहनुमते राजभय चोरभय परमंत्र परयंत्र परतंत्र परविद्याश्छेदय-छेदय स्वमंत्र स्वयंत्र स्वतंत्रकाविद्याः प्रकटय प्रकटय सर्वारिष्टन्नाशय-नाशय सर्वशत्रून्नाशय-नाशय असाध्यं साधय-साधय हुं फट् स्वाहा।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

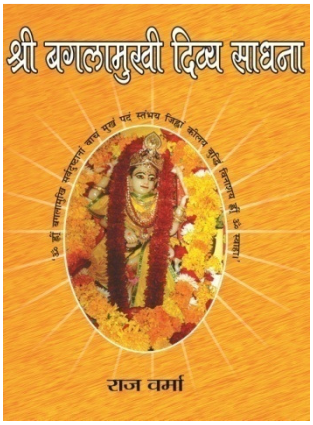

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413